

श्री आदिनाथ जिन पूजन

(डॉ. अखिल बंसल कृत)

तुम हो नाभिराय के नंदन, वंदन तुमको बारम्बार।
निज स्वरूप का ध्यान लगाकर, आप किये भव सागर पार॥
चारों दिश आभा से सुरभित, आदीश्वर की जय-जयकार।
जो भी शरण आपकी आया, उसका खुला मुक्ति का द्वार॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः ।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् ।

अष्टक

निर्मल जल की धारा से मैं, जिनवर चरण पखारूं ।
जन्म जरा के दूषित पल को, क्षण भर में विसराऊं॥
तुम हो जगत पूज्य आदीश्वर, चरणन चित्त लगाऊं।
विघ्न विनाशक पद पंकज को, पूजूं शिवमग पाऊं॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।
केसर संग कपूर मिलाकर, सुरभित चंदन लाऊं।

भव ताप मिटे मन शांत रहे, छवि निरखत ही हर्षाऊं ॥ तुम॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।
ये तंदुल गंध सुगंधित अक्षत्, स्वर्ण थाल भर लाऊं।

अक्षय पद पाने को जिनवर, मैं उपाय रच डालूं। तुम॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।
पुष्प सुगंधित महा मनोहर, सुमन पुंज ढिंग लाऊं।

काम व्याधि के नाश करन को, अर्पण कर सुख पाऊं। तुम॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।
व्यंजन के विविध समूह संग, मैं नैवेद्य बनाऊं ।

चेतन क्षुधा मिटाने हेतु, नित नैवेद्य चढाऊं ॥ तुम॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
मणिमाला दीपों की लेकर, तम को आज नशाऊं।

अन्तर्मन के अंधकार को, क्षण में दूर भगाऊं॥

तुम हो जगत पूज्य आदीश्वर, चरणन चित्त लगाऊं।
 विघ्न विनाशक पद पंकज को, पूजूं शिवमग पाऊं॥
 ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
 धूप सुगंधित द्रव्य मयी ले, नभ मण्डल महकाऊं।
 जीवन अघ की ज्वाला में, ईधन की धूप उडाऊं ॥ तुम॥
 ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
 सरस फलों से उपवन भूषित, अर्पित कर मुस्काऊं।
 अल्पावधि जीवन का झोंका, अमृत प्रतिफल पाऊं॥ तुम॥
 ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
 अष्टकर्म आवरणों का मैं, यह आतंक मिटाऊं।
 पथ में समता भाव धरूँ नित, चरणन अर्घ चढाऊं ॥ तुम॥
 ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

आषाढ़ कृष्णा दोज दिन, मरुदेवी उर आय।
 नाभिराय सुत आप हो, हर्ष अयोध्या छाय॥
 ॐ ह्रीं श्री आषाढकृष्णद्वितीयायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 चैत्र कृष्ण नवमी दिना, खुशियां छाई अपार।
 सुरपति जन्मोत्सव किया, गाये मंगलाचार॥
 ॐ ह्रीं श्री चैत्रकृष्णनवम्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 नृत्य देख नीलाजंना, राज-पाट विसराय।
 नवमी कृष्णा चैत्र की, वन में ध्यान लगाय॥
 ॐ ह्रीं श्री चैत्रकृष्णनवम्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 फाल्गुन कृष्ण एकादशी, पायो केवलज्ञान।
 दिव्य देशना गूँजती, इन्द्र करत गुणगान॥
 ॐ ह्रीं श्री फाल्गुनकृष्णैकादश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
 चौदस कृष्णा माघ दिन, गिरि कैलाश महान।
 अष्टकर्म का नाश कर, मोक्ष गये भगवान॥
 ॐ ह्रीं श्री माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

वीतराग सर्वज्ञ की, महिमा करूं बखान।

मैं गाऊँ जयमालिका, आदीश्वर भगवान ॥

प्रथम जिन धुरन्धरम्, अरिहन्त देव मंगलम्।

नाभिराज नन्दनम्, नमामि आदि जिनवरम्॥

नमामि आदि जिनवरम्, नमामि आदि जिनवरम्॥१॥

ब्राह्मी-सुन्दरी सुता, ज्ञान वृद्धि कारणम्।

ऋषभ राजेश्वरम्, नमामि आदि जिनवरम्॥२॥ नमामि.

नीलांजना नृत्यकम्, वैराग्य पथ धारकम्।

भरत-बाहु सुतं, नमामि आदि जिनवरम्॥३॥ नमामि.

सर्वज्ञ देव देवनम्, बृषभसेन गणधरम्।

जन्म-मरण विनाशनम्, नमामि आदि जिनवरम्॥४॥ नमामि.

भरतक्षेत्र भूषणम्, कैलाशगिरि वासनम्।

मोक्ष श्री निक्केतनम्, नमामि आदि जिनवरम्॥५॥ नमामि.

सर्व विघ्न नाशनम्, निज स्वरूप मोहनम्।

कष्ट-कालुष हरम्, नमामि आदि जिनवरम्॥६॥ नमामि.

प्रतिमा नमों सुखकरम्, ऋषभदेव मन्दिरम्।

जीव सब हितकरम्, नमामि आदि जिनवरम्॥७॥ नमामि.

त्रिभुवन तिलक विश्वेश्वरम्, प्रभुवर महा परमेश्वरम्।

महेन्द्र इन्द्र वन्दनम्, नमामि आदि जिनवरम्॥८॥ नमामि.

दिग्-दिगन्त सोहनम्, जैनम् जयतु शासनम्।

‘अखिल’ विश्व निरंजनम्, नमामि आदि जिनवरम्॥९॥ नमामि.

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालामहार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

आदिनाथ भगवान का करो सुमंगल गान।

‘अखिल’ परम पद प्राप्त हो, होवे निज कल्याण॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)